शिक्षक अधिगम केन्द्र : शिक्षकों के विकास के लिए एक प्रभावी स्थान

रुद्रेश एस.



किसी भी विद्यालय की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर होती है। विद्यार्थी विद्यालय में जो कुछ भी सीखते हैं उसका सीधा सम्बन्ध इस बात से है कि शिक्षक उन्हें क्या और कैसे सिखाते हैं। और शिक्षक उन्हें क्या और कैसे सिखाते हैं, यह उनके ज्ञान, कौशल, प्रेरणा और प्रतिबद्धता पर निर्भर है। यदि शिक्षकों से यह उम्मीद की जाती है कि उनके शिक्षण सम्बन्धी दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण बदलाव हो तो वही बदलाव उनकी सेवा पूर्व शिक्षा और सेवाकालीन पेशेवर कार्यक्रमों में भी नजर आना चाहिए। सरकारी विद्यालयों के कई शिक्षक अपना ज्ञान बढ़ाने, नई चीजें सीखने और कक्षा की बदलती माँगों के अनुसार नए बदलावों को अपनाने के लिए तैयार हैं। बड़ी संख्या में सरकारी विद्यालयों के शिक्षक ग्रामीण क्षेत्रों में सेवारत हैं। ऐसे शिक्षकों के लिए उपलब्ध सुविधाओं की जाँच आवश्यक है ताकि वे अपने विषय सम्बन्धी ज्ञान को उन्नत कर सकें और दिन-प्रतिदिन की शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने के लिए सहायता प्राप्त कर सकें। शिक्षकों को शैक्षिक सहायता प्रदान करने के लिए स्थापित बुनियादी तन्त्रों को समझना भी आवश्यक है।

वास्तव में देखा जाए तो शिक्षकों को अपने कार्यस्थलों में शैक्षिक विकास के बहुत कम अवसर मिलते हैं। शिक्षकों के पेशेवर विकास की केवल एक आधिकारिक गतिविधि देखने में आती है यानी सर्व शिक्षा अभियान का प्रशिक्षण कार्यक्रम, लेकिन अक्सर वह भी असम्बद्ध रूप से आयोजित होता है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की जवाबदेही आज चर्चा का मुख्य विषय है, खासकर कम नामांकन और नामांकित बच्चों के सत्र के अन्त तक स्कूल में टिकने की संख्या (retention) को देखते हुए। शिक्षकों की पेशेवर क्षमता उनकी जवाबदेही बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शिक्षकों के पेशेवर विकास के अन्तर्गत औपचारिक प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ आ जाती हैं। ये प्रशिक्षण सत्र विशिष्ट सामग्री पर एक वर्ष में दो या तीन बैचों में आयोजित किए जाते हैं। इनमें सामग्री पर सतही तौर पर चर्चा की जाती है और अक्सर ऐसे प्रशिक्षण सत्रों में शिक्षकों की जरूरतों, कक्षा की समस्याओं, शिक्षा के परिप्रेक्ष्य और विषय की प्रकृति के बारे में चर्चा नहीं की जाती और किन्हीं दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों में चर्चित सामग्री के बीच बहुत कम सम्बन्ध होता है। शिक्षकों के गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए प्रति वर्ष प्रशिक्षण के दो से अधिक सत्र आवश्यक हैं। उनके विकास की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए उन्हें औपचारिक व अनौपचारिक बातचीत के अवसर दिए जाने चाहिए और उनकी जरूरतों के आधार पर उनके साथ सतत रूप से संलग्न होना चाहिए। साथ ही, प्रशिक्षण अधिक प्रभावी तब होगा जब शिक्षक यह जान लेंगे कि उन्हें किन विषयों को सीखना है और स्वायत्त रूप से निर्णय लेंगे कि उन्हें पेशेवर विकास करना है या नहीं।

अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन ने शिक्षकों के विकास के लिए एक स्वतंत्र व स्वैच्छिक स्थान प्रदान करने की दृष्टि से शिक्षक अधिगम केन्द्र या टीचर लर्निंग सेंटर (टी.एल.सी.) की अवधारणा पर विचार किया जो पेशेवर विकास की एक निरन्तर प्रक्रिया में शिक्षकों को संलग्न करने की रणनीति का एक हिस्सा था। टी.एल.सी. का भौतिक स्थान तो सिर्फ एक ढाँचा है जो सीखने का माहौल बनाता है, इसमें जीवन संचार होता है वहाँ होने वाली मानवीय बातचीत से। वर्तमान में चल रहे सेवाकालीन कार्यक्रमों के विपरीत टी.एल.सी. मॉडल पेशेवर विकास का ऊर्ध्वगामी मॉडल है। पहला टी.एल.सी. 2009 में कर्नाटक के यादगीर जिले के शोरापुर खण्ड में स्थापित किया गया। अब ये टी.एल.सी. उन छह राज्यों में मौजूद हैं जहाँ अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन कार्यरत है, जिनमें से अधिकतर 72 उप-महाद्वीपों के 44 जिलों के ग्रामीण इलाकों में हैं। शिक्षक पेशेवर विकास के क्षेत्र में हमारा अनुभव इस बात की पुष्टि करता है कि टी.एल.सी. शिक्षकों तक पहुँचने और उन्हें शैक्षिक रूप से जोड़ने का सबसे सुसंगत और किफायती तरीका है। इसलिए वर्तमान शैक्षिक वर्ष में 60 टी.एल.सी. और स्थापित करने की योजना है एवं आने वाले वर्षों में पूरे देश में 300 टी.एल.सी. स्थापित किए जाएँगे।

शिक्षक अधिगम केन्द्र या टीचर लर्निंग सेंटर क्या है?

- टी.एल.सी. एक मुक्त स्थान है जहाँ शिक्षकों को अपने विषय के साथ जुड़ने के लिए औपचारिक, अनौपचारिक और गैर-औपचारिक अवसर मिलते हैं। यहाँ के शैक्षिक संसाधन सभी के लिए उपलब्ध हैं जिनमें पुस्तकालय की पुस्तकें, विज्ञान प्रयोगशाला के उपकरण, गणित किट, कम्प्यूटर और इंटरनेट की सुविधाएँ तथा शिक्षण-अधिगम की अन्य सामग्रियाँ शामिल हैं।

- टी.एल.सी. में अपने सहकर्मियों से सीखने, स्व-अधिगम और विशेषज्ञों से सीखने के अवसर मिलते हैं जिससे शिक्षक समुदाय का पेशेवर विकास होता है।

- इससे शिक्षकों को अपने अवधारणात्मक, तकनीकी और मानवीय सम्बन्धों के कौशल विकसित करने का अवसर मिलता है।
- टी.एल.सी. शिक्षकों को अपने अनुभव साझा करने और एक-दूसरे से सीखने का गैर-औपचारिक स्थान भी है।

टी.एल.सी. में उपलब्ध शैक्षिक संसाधन

सामान्यतया टी.एल.सी. में निम्नलिखित संसाधन उपलब्ध होते हैं:

पुस्तकें और पत्रिकाएँ : विषयवस्तु, सन्दर्भ, कहानियाँ, विश्वकोश, शब्दकोश, शैक्षिक रिपोर्ट, शैक्षिक नीति सम्बन्धी दस्तावेज, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र।

उपकरण और शिक्षण-अधिगम सामग्री : रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, भौतिक शास्त्र, भूगोल और खगोल विज्ञान जैसे विषयों में अधिगम बढ़ाने में सहायक उपकरण।

शिक्षण-अधिगम सामग्री बनाने के लिए आवश्यक बुनियादी सामग्री : जिनका उपयोग करके शिक्षक शिक्षण-अधिगम सामग्री बना सकें और उनका उपयोग कक्षा में कर सकें।

डिजिटल सामग्री : कम्प्यूटर और इंटरनेट, ई-संसाधन (लेखों की सॉफ्ट कॉपी, वीडियो, शैक्षिक इंटरैक्टिव सॉफ्टवेयर, शैक्षिक वीडियो)

अवकाश के समय की गतिविधियों और मनोरंजन के लिए सामग्री : शटल कॉक, वॉलीबॉल, शतरंज, कैरम आदि।

मानव संसाधन : विषय के संसाधक और शिक्षक संसाधक

टी.एल.सी. किस प्रकार से कार्य करता है?

टी.एल.सी. सप्ताह के दिनों में शाम के चार बजे से रात के आठ बजे तक और सप्ताहान्त में सुबह दस बजे से रात के आठ बजे तक खुला रहता है ताकि शिक्षक अपने खाली समय में यहाँ उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग कर सकें। यहाँ औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह की गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। औपचारिक गतिविधियों में कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ, सम्मेलन और दिए गए भौगोलिक क्षेत्र के बच्चों द्वारा विशिष्ट विषय पर कक्षा-परियोजनाओं की प्रदर्शनियाँ आ जाती हैं। अनौपचारिक गतिविधियों में सहज रूप से केन्द्र में आना, सामग्री माँगकर ले जाना, स्वैच्छिक शिक्षक मंच, सहकर्मी चर्चा, सायंकालीन चर्चा, स्व-अधिगम आदि आ जाते हैं। इस प्रकार के अनौपचारिक स्थान से निरन्तरता व जुड़ाव विकसित होता है और शिक्षकों की आवश्यकता पर आधारित ज्ञान, प्रवृत्ति और कौशल का संवर्धन भी होता है।

टी.एल.सी. में नियमित रूप से कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। कुछ कार्यशालाएँ पाँच दिनों की होती हैं जिनमें प्रकरण की गहरी समझ प्रदान करने की कोशिश की जाती है और शिक्षकों को अपने अधिगम पर चिन्तन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। नियमित रूप से आयोजित संगोष्ठियाँ और सम्मेलन शिक्षकों को शोध करने और अपना पेपर प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तथा विषय-विशेषज्ञों के साथ बातचीत करने में भी सहायक होते हैं।

प्रतिदिन औसतन 10 से 15 शिक्षक टी.एल.सी. में आकर पुस्तकें/पात्रिकाएँ पढ़ते हैं, सामग्रियाँ माँगकर ले जाते हैं, इंटरनेट का उपयोग करते हैं और अपने साथियों के साथ बातचीत करते हैं। प्रत्येक विषय पर हर महीने किसी नियत सप्ताहान्त को एक स्वैच्छिक शिक्षक मंच आयोजित किया जाता है। ये मंच किसी विशिष्ट विषय के 20-25 शिक्षकों को एक साथ इकट्ठा होकर टी.एल.सी. में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करते हुए किसी प्रकरण पर अधिक जानकारी पाने का अवसर देते हैं और फाउण्डेशन का कोई संसाधक इस गतिविधि के संचालन में सहायता देता है। ऐसा कार्यक्रम तीन से पाँच घण्टे तक चलता है। सायंकालीन चर्चा में व्यापक शैक्षिक विमर्श पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाता है। इसकी अवधि कम होती है (दो घण्टे प्रति सत्र) जिसमें शिक्षक कुछ चयनित लेख पढ़कर आते हैं और उस पर चर्चा करते हैं। टी.एल.सी. संसाधनों का उपयोग अगली कक्षा के लिए भी किया जाता है।

अधिगम केन्द्रों के रूप में टी.एल.सी.

टी.एल.सी. अधिगम केन्द्रों के रूप में विकसित हुए हैं जहाँ किसी एक शहर के शिक्षक अपने ही द्वारा चुने हुए प्रकरणों के बारे में जानकारी पाने के लिए इकट्ठा होते हैं। वे सायंकालीन चर्चाओं और स्वैच्छिक मंचों के लिए कार्यक्रम तैयार करते हैं। नोट्स और पारम्परिक शिक्षण अधिगम सामग्री तैयार करने के अलावा शिक्षकों ने कक्षा में उपयोग के लिए वीडियो फिल्में भी बनाई हैं। समूहों में कार्य करने से उनके बीच घनिष्ठ सम्बन्ध बनते हैं और इससे उन्हें एक-दूसरे से सीखने में मदद मिलती है।

निरन्तरता और प्रासंगिकता

आमतौर पर सरकारी स्कूलों के शिक्षण प्रशिक्षण में जो रिक्ति दिखाई देती है उसे टी.एल.सी. की गतिविधियाँ पूरा करती हैं। टी.एल.सी. के द्वारा जो उपयुक्त शैक्षिक इनपुट दिए जाते हैं वे कार्यशालाओं को पूरकता प्रदान करते हैं। शिक्षक विकास की प्रक्रिया में निरन्तरता होनी चाहिए और इसमें सतत फीडबैक तथा नियमित चिन्तन होना भी अनिवार्य है। अगर प्रशिक्षण असम्बद्ध या वर्गीकृत हो तो शायद शिक्षक वह अवधारणा पूरी तरह से न समझ पाएँ और इसके परिणामस्वरूप वे उसे कक्षा में भी प्रभावी तरीके से नहीं बता पाएँगे। अक्सर जिन प्रकरणों को औपचारिक प्रशिक्षण के लिए उचित समझा जाता है वे स्वयं शिक्षक की कक्षा की आवश्यकताओं से असम्बद्ध होते हैं।

ये सत्र शिक्षकों को अपने कौशलों का पूरी तरह से विकास करने में मदद नहीं कर पाते। इसलिए शिक्षक विकास के कार्यक्रम सन्दर्भगत, भौगोलिक व व्यक्तिगत जरूरतों के लिए संगत होने चाहिए और स्व-अधिगम, सहकर्मी-अधिगम, आवश्यकता पर आधारित चर्चाओं, निदर्शन आदि गैर-औपचारिक साधनों के माध्यम से निरन्तर विकास के अवसर देने वाले भी होने चाहिए। प्रशिक्षण की विषयवस्तु की प्रस्तुति के लिए विभिन्न प्रकार के तरीकों का उपयोग करना चाहिए (केवल व्याख्यान देना ठीक नहीं)।

उपलब्ध संसाधनों का उपयोग

टी.एल.सी. के कारण शिक्षकों को भौतिक और डिजिटल दोनों प्रकार की सामग्रियाँ मिल पाई हैं और साथ ही उन्हें कक्षा में पहले से अधिक संसाधनों व शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित किया है। टी.एल.सी. में उपलब्ध सामग्रियों को इस तरह से व्यवस्थित किया जाता है कि शिक्षकों को किसी विशेष पाठ के लिए सही सामग्री आसानी से मिल जाए। प्राथमिक विद्यालयों की औपचारिक पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम के अनुसार ही सामग्रियाँ जुटाई जाती हैं।

टी.एल.सी. के सबसे महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार हैं, पहला केन्द्र में चलने वाली शैक्षिक गतिविधियाँ और दूसरा शिक्षकों तक पहुँचना। कुछ ऐसी गतिविधियाँ भी हो सकती हैं जो शैक्षिक न हों, जैसे खेल, समाचार पत्र पढ़ना, गैर-शैक्षिक वीडियो देखना, सामान्य विषयों पर एक-दूसरे से बातचीत करना आदि। हालाँकि औपचारिक रूप से नियत शैक्षिक गतिविधियाँ टी.एल.सी. का केन्द्र बिन्दु हैं किन्तु विद्यालय, अधिगम, शिक्षण, विषयवस्तु, अध्यापन कला जैसे विषयों पर अनौपचारिक चर्चाओं से शिक्षक अपने कार्य से जुड़ पाते हैं और सीखे हुए ज्ञान को अपने दिन-प्रतिदिन के कार्य में लागू करने में समर्थ होते हैं। विभिन्न स्थानों में सहकर्मी समूह बैठकों का आयोजन किया जा सकता है जैसे स्थानीय चाय की दुकान, मन्दिर, कैम्पस आदि या फिर शिक्षक अपने लिए संगोष्ठी या चर्चा जैसे कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं। पुस्तकों और शिक्षण अधिगम सामग्री के साथ विद्यालय जाने से विद्यार्थियों और तत्पश्चात शिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया को प्रोत्साहन मिलता है। जब एक बार कुछ शिक्षक टी.एल.सी. आने लगते हैं और यह महसूस करते हैं कि यहाँ की गतिविधियों से उनके पेशेवर विकास में संवृद्धि हो रही है तो वे अपने साथ और शिक्षकों को भी लाने लगते हैं।

टी.एल.सी. के संचालन से हमने जो भी सीखा उनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है :

- अगर टी.एल.सी. ऐसी जगह स्थित हो जहाँ 100 से अधिक शिक्षक रहते हैं तो उसका उपयोग अधिकाधिक होता है।
- जो शिक्षक टी.एल.सी. से तीन किलोमीटर की दूरी पर रहते हैं वे उसका अधिक उपयोग करते हैं। एक और जरूरी बात यह भी है कि उन्हें सभी सामग्रियों का उपयोग करने की खुली छूट होनी चाहिए।
- अधिगम के लिए टी.एल.सी. का माहौल गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए जैसे बैठने के लिए पर्याप्त स्थान, साफ-सुथरा वातावरण, पेयजल, शौचालय की सुविधा, सीखने के लिए गुणवत्तापूर्ण सामग्री, विभिन्न शैलियों की पुस्तकें, कम्प्यूटर, बिजली की निरन्तर आपूर्ति, मनोरंजन व अवकाश के साधन, हर विषय के लिए संसाधक आदि। ये सारी चीज़ें टी.एल.सी. की सफलता के लिए जरूरी हैं।
- जिन शिक्षकों में अपने पेशेवर विकास के प्रति स्वेच्छा से उत्तरदायित्व की भावना होती है वे टी.एल.सी. को जीवन्त बना देते हैं।
- टी.एल.सी. शिक्षक विकास की गतिविधियों का अभिन्न हिस्सा होने के साथ-साथ पृथक रूप से भी कार्य कर सकते हैं।
- टी.एल.सी. की गतिविधियाँ कक्षा की जरूरतों को पूरा करने वाली और शिक्षकों के पेशेवर विकास को बढ़ावा देने वाली होनी चहिए। तभी शिक्षक इन केन्द्रों में नियमित रूप से आएँगे।
- टी.एल.सी. को समय की जरूरतों के अनुसार नियमित रूप से अपना उन्नयन करते रहना चाहिए। टी.एल.सी. शिक्षकों को संलग्न करने का एक प्रभावी तरीका है क्योंकि वे शिक्षकों को अपने पेशेवर विकास के लिए स्वेच्छा से उत्तरदायी बनाते हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं जो यह बताते हैं कि शिक्षकों ने अपने पेशेवर विकास का कार्य कैसे किया। यादगीर जिले में किए गए एक अध्ययन से यह पता चला है कि टी.एल.सी. की वजह से शिक्षकों में सकारात्मक बदलाव आया। टी.एल.सी. ने शिक्षकों को अपने विषय सम्बन्धी ज्ञान का उन्नयन करने और विद्यालय के दैनिक क्रियाकलापों में बाल-स्नेही कक्षा विधियों को अपनाने को प्रेरित किया। आशा है कि टी.एल.सी. के निरन्तर उपयोग से विद्यार्थियों के अधिगम के परिणामों की गुणवत्ता बढ़ेगी।

रुद्रेश एस. अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के यादगीर व कलबुर्गी जिला संस्थान का नेतृत्व करते हैं। उन्होंने गुलबर्गा विश्वविद्यालय से सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है और वे पिछले 13 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में कार्य कर रहे हैं। वे शिक्षकों व अधिकारियों की क्षमता निर्माण के साथ-साथ सरकारी सम्बन्धों के प्रबन्धन का कार्य भी सम्भालते हैं। उनसे rudresh@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल